जिसने जीवन को ठीक से जाना, उसकी कोई मृत्यु नहीं

जीवन और मृत्यु का रहस्य

जिसके हृदय में प्रेम का रस भरा और जिसकी रसना पर राम का नाम रहा–वह मृत्यु का आनन्द से स्वागत करता है। जिसने जीवन को जाना, उसकी कोई मृत्यु नहीं

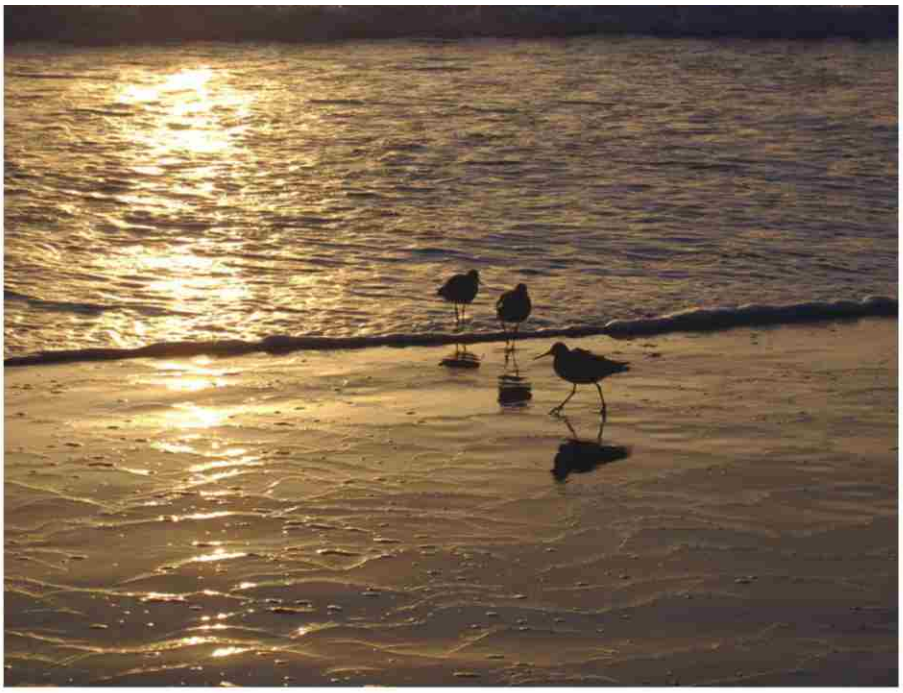

'कबीर बादल प्रेम का, हम पर बरसा आइ। अन्तर भीगी आत्मा, हरी भई बनराइ।।'

शब्दों के बादल से कहीं वर्षा होगी? शब्दों के बादल से अगर वर्षा भी हो तो क्या तुम्हारा बगीचा हरा हो जाएगा? क्या वृक्षों में फूल लगेंगे? वृक्षों को तुम धोखा न दे सकोगे। शब्दों की वर्षा से वे धोखे में न आयेंगे। वे असली जल चाहते हैं। असली जल अनुभव का जल है।

'कबीर बादल प्रेम का, हम पर बरसा आई'–और, जैसे ही तुम सिर को हटा दोगे, बरसा हो जाएगी। जैसे ही यह तुम्हारा अहंकार न होगा, बादल बरस जायेगा। बादल तो घुमड़ ही रहा है तुम्हारे ऊपर सदा से। बादल ने तो एक क्षण को तुम्हें छोड़ा नहीं है, क्योंकि वह तुम्हारा अन्तरतम स्वभाव है। वह तुम्हारी आत्मा के होने का गुण है। प्रेम कुछ ऐसी चीज नहीं है कि जिसे हम बाहर से लेते हैं और देते हैं। प्रेम तो ऐसे ही है जैसे आग में अग्नि है और जल में शीतलता है–ऐसे ही आत्मा में प्रेम है; लेकिन तुम्हारी नज़र उस तरफ नहीं, तुम पीठ किये खड़े हो। अपनी ही तरफ पीठ किये खड़े हो। बादल तो घुमड़ रहा है। कभी-कभी उसकी आवाज भी तुम्हें सुनायी पड़ती है, लेकिन तुम्हारा मन ऐसा है कि तुम कुछ व्याख्या कर लेते हो।

रवीन्द्रनाथ का एक प्रसिद्ध गीत है कि एक बहुत बड़ा मंदिर था। मंदिर में सौ पुजारी थे। पूजा चलती थी, अर्चना चलती थी, लाखों रुपये का प्रसाद चढ़ता था। एक रात बड़े पुजारी ने स्वप्न देखा कि मंदिर का जो प्रभु है, उसने कहा कि आज रात मैं आ रहा हूं, तैयारी पूरी कर लो। सुबह वह जागा; सोचा, सपना सपना है। और पुजारियों को भगवान पर बिलकुल भरोसा नहीं होता, मंदिर आने वालों को थोड़ा-बहुत होता भी हो। मंदिर को जो धंधे की तरह चला रहे हैं, उनको कभी नहीं होता, हो भी नहीं सकता। क्योंकि वे जानते हैं कि यह सिर्फ धंधा है। पर फिर भी, डरा भी बड़ा पुजारी कि हो ना हो, कहीं सपना सच न हो। कहीं ऐसा न हो कि हम बिना तैयारी में हों, और वह परमात्मा आ जाये, हम मुश्किल में पड़ जायें। तो सोचा, उचित है कि अपने साथियों से कह दूं। अपने साथियों को इकट्ठा किया–सौ पुजारियों को, और कहा, कि ऐसा सपना देखा है। सपना सपना ही है, कोई भरोसे की जरूरत नहीं; लेकिन कहीं ऐसा न हो कि सपना सच ही हो जाये! तो पुजारियों ने कहा : "हर्ज भी क्या है। हम तैयारी कर लें। अगर भगवान न आया तो भोग हम अपने को ही लगा लेंगे।" और, यह तो पुजारी सदा ही करते रहे हैं। लगता तो भोग भगवान को है, पहुंचता तो पुजारी को है। "हर्ज क्या है। और कई दिनों से मंदिर की सफाई भी नहीं हुई, सफाई भी हो जाएगी इस बहाने।" भरोसा तो किसी को था नहीं, क्योंकि सभी के पास सिर है और सभी सोचते हैं कि सपने कहीं सच हुए हैं।

कुछ तैयारी की, साफ-सुथरा किया मंदिर। दीये जलाये। धूप बाली। फूलों से सजाया। सांझ हो गयी, कोई खबर नहीं! रात उतरने लगी; कोई खबर नहीं! आखिर पुजारी आपस में कहने लगे : ''हम भी नासमझ हैं—सपने पर भरोसा कर लिया। अब हम भोग लगा लें और सो जाएं।'' दिन भर के थके थे, भोजन किया, सो गये।

आधी रात उसका रथ आया। रथ की आवाज सुनायी पड़ी। एक पुजारी को नींद में लगा कि उसका रथ आ रहा है। बड़ी आवाज है। उसने कहा : ''सुनो, जागो, लगता है कि प्रभु आ रहे हैं। रथ आ रहा है।'' दूसरे पुजारी ने कहा : ''बकवास बंद। दिन भर के थके-मांदे हैं। कोई रथ-वथ नहीं है; हवा के झोंके दरवाजों से टकरा रहे हैं।'' व्याख्या हो गयी। वो सो गये। रथ द्वार पर आकर रुका। वह चढ़ा। उसके पैरों की पगध्वनि सुनायी पड़ी। उसने द्वार पर दस्तक दी। फिर किसी ने कहा कि सुनो, लगता है वह आ गया, द्वार पर दस्तक पड़ रही है। फिर कोई नाराज हुआ; उसने कहा : ''दिन भर के थके हैं, तुम्हें यह भी समझ नहीं। अब छोड़ो भी बकवास। सपने कहीं सच हुए हैं? यह कोई द्वार पर दस्तक नहीं है, बादलों की गड़गड़ाहट है। सो जाओ, शांत रहो।'' सुबह उठे, रथ के पहियों के निशान मंदिर के द्वार तक बने थे। सीढ़ियों पर कोई चढ़ा था, उसके पद-चिन्ह थे। रवीन्द्रनाथ ने कहा है कि लेकिन अब बहुत देर हो गयी थी। अवसर चूक गया था। बादल तो तुम्हारे चारों तरफ घुमड़ रहा है; जो देख सकते हैं, वे देख सकते हैं। लेकिन तुम्हारा सिर बीच में खड़ा है; बादल तुम पर बरस नहीं पाता। बरस भी जाये तो तुम चिकने घड़े हो—तुम्हारा सिर चिकने घड़े की तरह है—वह सब बिखर जाता है; तुम्हारे हृदय तक नहीं पहुंच पाता। और वही है बनराइ, जिसकी कबीर बात कर रहे हैं।

'कबीर बादल प्रेम का, हम पर बरसा आइ।
अन्तर भीगी आत्मा, हरी भई बनराइ।।'

सारा जंगल हरा हो उठा। हृदय है भी जंगल जैसा—वाइल्ड। बुद्धि तो परिष्कृत है, संस्कृत है, सभ्य है, समाज की है। हृदय तो जंगल जैसा है—अपरिष्कृत, आदिम, असंस्कृत, असभ्य। वह तो जंगली जानवरों जैसा, वृक्षों जैसा, आकाश के बादलों जैसा है। आदमी का हाथ अब तक हृदय पर नहीं पहुंच पाया, पहुंच भी नहीं सकता। समाज तुम्हारे सिर के आगे नहीं कहा जा सकता। तुम्हारे हृदय तक तो केवल परमात्मा की ही पहुंच है। तो कहते हैं कबीर : जब कोई सिर को छोड़ देता है—अहंकार को विचार को—तो बरस जाता है बादल।

'अन्तर भीगी आत्मा, हरी भई बनराइ। ।'

'जिहि घट प्रीति न प्रेमरस, पुनि रसना नहीं राम। ते नर इस संसार में, उपजि भये बेकाम।।'

तुम मरते क्षण में पाओगे कि तुम्हारा जीवन बेकाम गया। अगर तुम्हारे होंठों पर उस प्यारे का नाम न आया और अगर तुम्हारे हृदय-घट में उसका प्रेम रस न भरा हो तो मरते वक्त तुम पाओगे कि अवसर बीत गया। तब तुम द्वार खोल कर देखोगे कि बहुत बार उसका रथ तुम्हारे हृदय के मंदिर तक आने की कोशिश किया, बहुत बार उसके चरण-चिन्ह तुम्हारी सीढ़ियों पर पड़े, बहुत बार उसने दस्तक दी; लेकिन हर बार तुम्हारी खोपड़ी ने व्याख्या कर ली—आकाश में बादलों की गर्जन है, हवा के झोंके हैं, कोई ऐरा-गैरा चलता होगा राह पर। तुम अवसर चूकते गये—मृत्यु के क्षण में तुम पाओगे...

बादल तो तुम्हारे चारों तरफ घुमड़ रहा है; जो देख सकते हैं, वे देख सकते हैं। लेकिन तुम्हारा सिर बीच में खड़ा है; बादल तुम पर बरस नहीं पाता। बरस भी जाये तो तुम चिकने घड़े हो—तुम्हारा सिर चिकने घड़े की तरह है—वह सब बिखर जाता है; तुम्हारे हृदय तक नहीं पहुंच पाता। और वही है बनराइ, जिसकी कबीर बात कर रहे हैं

मृत्यु के क्षण में लोगों को रोते, उदास, बेचैन देखते हो—वह घबराहट मृत्यु की वजह से नहीं आती; वह घबड़ाहट खो गये जीवन के अवसर के कारण आती है। अवसर था, हाथ में आया और चला गया। मृत्यु से कोई कभी भयभीत नहीं होता, क्योंकि जिसे तुम जानते नहीं, उससे तुम भयभीत कैसे होओगे? मृत्यु को तुमने कभी देखा? उससे तुम डरोगे कैसे? अनजान से भय कैसा? उसने तुम्हें कभी कोई नुकसान पहुंचाया? कोई हानि की, जो तुम रोओगे, तड़पोगे, चिल्लाओगे? नहीं, असली बात और है।

मृत्यु के क्षण में तुम्हें पहली दफे समझ आती है कि सारा जीवन बेकाम गया। अब समय न बचा और यह मृत्यु सामने आ गयी, अब क्या करूं? तुम्हारी सारी दीनता तुम्हारे जीवन भर के असफल जाने की कथा है। जिसने जीवन को ठीक से जीया और जिसने जीवन के रहस्य को जाना-पहचाना और जिसके मंदिर में परमात्मा प्रविष्ट हुआ, जिसका सिंहासन खाली न रहा, जिसके हृदय में प्रेम का रस भरा और जिसकी रसना पर राम का नाम रहा—वह मृत्यु का आनन्द से स्वागत करता है। जिसने जीवन को जाना, उसकी कोई मृत्यु नहीं है। वह जीवन को जानकर मृत्यु को विश्राम की तरह पाता है—एक गहन विश्राम जीवन की थकान के बाद। तुम डरोगे! डर जीवन के बेकाम जाने से आता है।

—ओशो

कहै कबीर मैं पूरा पाया

प्रवचन न. 1 से संकलित

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)